IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

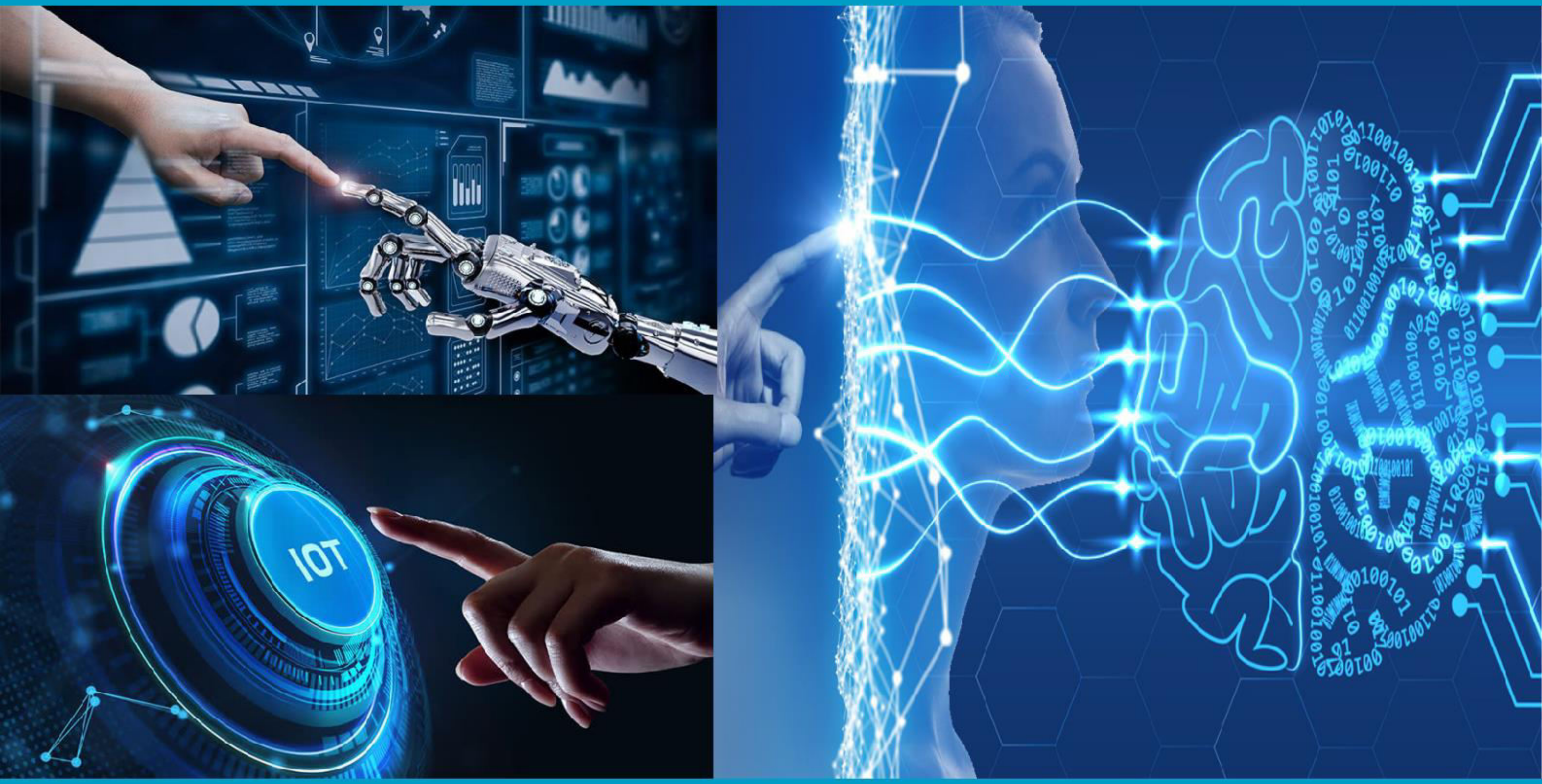

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 8, August 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 8, August 2023 |

राजस्थान में क्षेत्रीय पार्टी

Manoj Kumar Beniwal

School-Lecturer, Political Science, Rajasthan Government, Posting-Ami Mohammad

Shah Ki Basti, Barmer, Rajasthan, India

सार

राजस्थान में दो दलीय राजनीति है . इसके बावजूद हर विधानसभा चुनाव से पहले राजस्थान में थर्ड फ्रंट की आहट शुरु हो जाती है. सीपीएम,RLP,आम आदमी पार्टी,ट्राइबल पार्टी , एआईएमआईएम और बीएसपी सरीखे दल थर्ड फ्रंट कहे जा सकते है . अभी विधानसभा में सीपीएम के दो विधायक,RLP के तीन विधायक,BTP के दो विधायक है,वही बीएसपी से जीते छह विधायक बाद में कांग्रेस में चले गए थे. अभी थर्ड फ्रंट कामयाब क्यों नही हुआ क्योंकि सभी दल एक जुट नही फिर भी महागठबंधन की कोशिशें शुरु हो गई है.

राजस्थान में थर्ड फ्रंट की आहट तेज है . कांग्रेस और बीजेपी का मुकाबला करने के लिए दोनों पार्टियों से परे राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल ताल ठोकने को तैयार है . आम आदमी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा मिल गया है . AAP चाह रही है कि अन्य क्षेत्रीय दलों को एक जगह लेकर गठबंधन बनाया जाए . पहले बात बहुजन समाज पार्टी ने बीते चुनाव में छह सीटें जीत ली ये अलग बात है कि सभी छह विधायक आगे चलकर कांग्रेस में शामिल हो गए लेकिन हाथी ने अपनी ताकत दिखाई थी ..बीएसपी ने झुंझुनूं, अलवर , करौली और भरतपुर बेल्ट में कमाल का प्रदर्शन किया था ..तिजारा,किशनगढ़ बास,नगर,उदयपुरवाटी,करौली में हाथी के सिंबल पर विधायक जीत गए.16प्रतिशत के लगभग वोट BSP को केवल अलवर जिले में मिला था . वैसे पूरे राजस्थान में बीएसपी को साढ़े चार प्रतिशत मत मिला. पिछले विधानसभा चुनावों में मतस्य और मेवात क्षेत्र में हाथी का ग्राफ बढ़ा,मायावती का प्रभाव काम आया.अब फिर दावा है कि बिना हाथी के राज्य में सरकार नही बनेगी.

परिचय

बहरहाल पिछले अनुभव यही बताते है बीएसपी के जीते विधायक बाद में पाला बदल लेते है.अब बात कर लेते है हनुमान बेनीवाल की राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी आरएल, RLP की.विधानसभा चुनावों के समर में उम्मीदवार 57, तीन पर जीत और कांग्रेस - बीजेपी-बीएसपी के बाद राजस्थान में सर्वाधिक वोट लेने वाली पार्टी बनी RLP..हनुमान बेनीवाल खुद पहले विधायक और फिर नागौर से सांसद बन गए. . RLP के चुनाव चिन्ह बोतल का एक वर्ग विशेष के बीच खास असर देखने को मिला नतीजे यह निकले कि अपनी पहली पारी में ही RLP की परफोरमेंस प्रभावित करने वाली रही है. RLP ने 2.34प्रतिशत मत यूं कहें आठ लाख से अधिक मत प्राप्त किये.

तीन सीटें खींवसर से नारायण बेनीवाल,भोपालगढ़ से पुखराज गर्ग ,मेड़ता से इंदिरा देवी बावरी विधायक है. अब RLP गठबंधन सियासत की सिरमौर बनना चाहती है.

शेखावाटी, नहरी और बीकाणा के इलाके में साम्यवादियों की सियासी जमीन बरसों से है. यहां से समय समय पर कॉमरेड़ ताल ठोक रहे है. 1989 में श्योपत सिंह मक्कासर सांसद रह चुके है. बीते विधानसभा चुनाव में श्रीडूंगरगढ से गिरधारी लाल मईया और भादरा से बलवान पूनिया ने चुनाव जीता और विधानसभा में पहुंचे. कॉमरेड अमराराम कई बार विधायक रह चुके. सीपीएम किसानों की आवाज बुलंद करने के लिये चर्चित है..टीएसपी के क्षेत्र में आदिवासियों की मांगो को लेकर रहे आंदोलनों से भारतीय ट्राइबल पार्टी चमकी फिर क्या था विधानसभा चुनावों के रण में उतर गई. दो सीटें जीतकर सबको चौंका दिया. सागवाड़ा से रामप्रसाद और चौरासी से राजकुमार रोत ने चुनाव जीता भारतीय ट्राइबल पार्टी का गठन को मात्र दो साल ही बीते है और इसने मेवाड़ - वागड़ की सियासत में धमक पैदा कर दी. गुजरात के आदिवासी नेता छोटू भाई असावा इसके जनक है. बीटीपी का गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, एमपी के वनवासी बेल्ट में प्रभाव है. आम आदमी पार्टी ने राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल होने के बाद राजस्थान पर पूरा फोकस कर दिया है.किसी बड़े नेता को आम आदमी पार्टी का फेस बनाने की कोशिश में भी

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 8, August 2023 |

अरविंद केजरीवाल जुटे है. प्रदेश अध्यक्ष बनाकर संगठन को विस्तृत आकर देने में aap अभी जुटी हुई है, राष्टीय पार्टी का दर्जा मिलने के बाद आप की उत्सव यात्रा प्रदेश भर में शुरू हो गई है.[1,2]

AIMIM प्रमुख ओवैसी ने पहले ही राज्य में मुस्लिमों के बीच पैठ बनाना शुरू कर दिया है . मुस्लिमों के बीच के प्रमुख चेहरों ने पार्टी गतिविधियों का आगे बढ़ाने का काम शुरू कर दिया है , BTP से गठजोड़ की चर्चाएं पहले से है.

विचार-विमर्श

कांग्रेस के लिए गठबंधन पर कम प्रगति के संकेतों के बीच, राजस्थान में क्षेत्रीय दलों के महत्व को खारिज नहीं किया जा सकता है। **30 से अधिक विधानसभा क्षेत्र ऐसे हैं जहां बहुजन समाज पार्टी** (बीएसपी), नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी), सीपीएम और **इंडियन नेशनल लोक दल** (आईएनएलडी) जैसी छोटी पार्टियां काफी प्रभाव रखती हैं। **जहां कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में वे आश्चर्यचकित करने में सक्षम हैं, वहीं अन्य पर वे कांग्रेस और भाजपा** दोनों के लिए खेल बिगाड़ सकते हैं।

हालांकि, हाल ही में बीजेपी के बागी नेता घनश्याम तिवाड़ी द्वारा बनाई गई भारत वाहिनी पार्टी (बीवीपी) का एक-दो सीटों को छोड़कर ज्यादा असर नहीं दिख रहा है।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष **सचिन पायलट ने** बसपा के साथ सीट बंटवारे की बातचीत से साफ इनकार कर दिया है. उन्होंने कहा, "हम सभी 200 सीटों पर बीजेपी के खिलाफ लड़ने में सक्षम हैं." 2008 में, जब कांग्रेस ने 96 सीटें जीतीं - बहुमत से 4 कम, पार्टी को 6 बसपा विधायकों का समर्थन लेना पड़ा, जो अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली सरकार में शामिल होने के लिए दलबदल कर गए। "सीएम वसुंधरा राजे की आक्रामक गौरव यात्रा के आधार पर , भाजपा कुछ विधानसभा क्षेत्रों में सत्ता विरोधी लहर का मुकाबला करना चाहती है। 2008 में राजे हार गई थीं लेकिन कांग्रेस को स्पष्ट जनादेश नहीं मिला था.

यह 'आपकी अपनी पार्टी' है, यह देश की 'सबसे अच्छी पार्टी' है, अरे भाई यह 'हमारी अपनी पार्टी' है। यह 'हिन्दुस्तान हमारा' है और यह पार्टी 'राष्ट्रीय पॉवर' वाली है। आप सोच रहे होंगे कि हम कौनसी पार्टी की बात कर रहे हैं, जिसके लिए हमने इतने अलंकार लगा दिए। हम किसी पार्टी का महिमामंडन नहीं कर रहे, बल्कि यह सब राजनीतिक पार्टियों के ही नाम हैं, जिनको राजस्थान सरकार के निर्वाचन विभाग ने हाल ही चुनाव चिह्न आवंटित किए हैं।[3] निर्वाचन विभाग ने ऐसे पंजीकृत 97 दलों/पार्टियों को चुनाव चिह्न आवंटित किए हैं, जिनमें कई नाम ऐसे हैं, जो काफी रोचक हैं तो कई आम बोलचाल की भाषा में राष्ट्रीय पार्टियों के लिए उपयोग लिए जाते हैं। कुछ पार्टियां ऐसी भी हैं जिनके नाम काफी रोचक हैं। 'नेशनल फिफ्टी-फिफ्टी फ्रंट', 'आधी आबादी पार्टी' आदि ऐसे ही नाम हैं।

परिणाम

भारत में बहुदलीय पार्टी व्यवस्था है, जिसमें छोटे क्षेत्रीय दल अधिक प्रबल हैं। राष्ट्रीय पार्टियां वे हैं जो चार या अधिक राज्यों में मान्यता प्राप्त हैं। उन्हें यह अधिकार भारत के चुनाव आयोग द्वारा दिया जाता है, जो विभिन्न राज्यों में समय-समय पर चुनाव परिणामों की समीक्षा करता है। इसी प्रकार देश में स्थानीय राजनीतिक दलों की एक बड़ी संख्या चुनाव आयोग में पंजीकृत है, जिन्हें राष्ट्रीय अथवा राज्य दल के रूप में मान्यता नहीं मिली है। राजस्थान में विधानसभा चुनाव से पूर्व गठित राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी को निवार्चन विभान ने बोतल का चुनाव चिह्न आवंटित किया और पार्टी ने चुनाव में तीन सीटों पर जीत दर्ज की, लेकिन लोकसभा चुनाव में पार्टी का चुनाव चिह्न बदलकर टायर करने के बाद लोगों में इस बात को लेकर एक सवाल उठा कि निर्वाचन विभाग ने चिह्न क्यों बदल दिया।

दरअसल, वे दल जिनके पास एक राज्य में पर्याप्त वोट या सीटें हों, उन्हें चुनाव आयोग द्वारा राज्य पार्टी के रूप में अधिकृत किया जा सकता है। राज्य विशेष में राज्य दल के रूप में मान्यता मिलने से दल को एक विशेष चुनाव चिह्न आरक्षित करने का विकल्प मिल सकता है। एक पार्टी को एक या अधिक राज्यों में मान्यता प्राप्त हो सकती है। राज्य स्तर की मान्यता के लिए चुनाव आयोग में पंजीकृत दल को किसी एक शर्त को पूरा करना होता है, जिनमें दल को विधानसभा चुनाव में कम से कम कुल सीटों की 3 प्रतिशत सीटें या 3 सीटें जीतनी जरूरी है। या दल को राज्य में निर्धारित लोकसभा सीटों में प्रत्येक 25 सीटों पर एक या कम से कम एक या उसके अंश पर जो राज्य में निर्धारित हो। अथवा दल को लोकसभा /विधानसभा के चुनाव में वैध मतों का

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 8, August 2023 |

कम से कम 6 प्रतिशत मत प्राप्त हों तथा लोकसभा में कम से कम एक सीट और विधानसभा में 2 सीटों पर विजय प्राप्त की हो। अथवा यदि दल ने लोकसभा और विधानसभा में कोई सीट न जीती हो, लेकिन यदि उसने लोकसभा /विधानसभा चुनाव में वैध मतों के 8 प्रतिशत मत हासिल किए हों।[5,7]

निष्कर्ष

इस शोध प्रबंध के पहले भाग में तर्क दिया गया है कि पार्टी प्रणाली का गठन कानून के शासन पर निर्भर करता है, जिसे राज्य द्वारा अपने कानूनों और नीतियों को समान रूप से लागू करने और लागू करने की सीमा के रूप में परिभाषित किया गया है। जब कानून का शासन कमजोर होता है, तो मतदाता मुख्य रूप से राजनेताओं के प्रति लगाव बना लेते हैं, और मतदाता उस पार्टी को वोट देते हैं जिसे उनका पसंदीदा राजनेता स्थापित करना या उसमें शामिल होना चाहता है। नतीजतन, राजनेता अंततः पार्टी प्रणाली के गठन को आकार देते हैं, क्योंकि पार्टी संबद्धता के बारे में उनके निर्णय यह निर्धारित करते हैं कि कोई राजनीतिक दल सफल होता है या विफल। इसके विपरीत, जब कानून का शासन मजबूत होता है, तो मतदाता सीधे राजनीतिक दलों से जुड़ाव बना लेते हैं; इसलिए मतदाता यह निर्धारित करते हैं कि कौन सी पार्टियाँ पार्टी प्रणाली का गठन करती हैं। शोध प्रबंध का दूसरा भाग भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के मामले में कानून के कमजोर शासन के तहत पार्टी प्रणाली के गठन के तर्क को लागू करता है। यह परियोजना भारत जैसे कमज़ोर क़ानूनी शासन वाले लोकतंत्र में क्षेत्रीय पार्टियों की सफलता की व्याख्या इस बात पर केंद्रित करके करती है कि क्यों इतने सारे राजनेता क्षेत्रीय पार्टियों को स्थापित करने और उनमें शामिल होने का विकल्प चुनते हैं। भारतीय क्षेत्रीय दलों की असाधारण सफलता की व्याख्या करने वाले दो कारक हैं 1) जाति समूहों की भौगोलिक एकाग्रता (और कुछ हद तक, अन्य प्रकार के राजनीतिक रूप से प्रमुख समूह) और 2) राष्ट्रीय स्तर पर लगातार गठबंधन सरकार। जाति समूहों की भौगोलिक सघनता विभिन्न जाति समूहों के राजनेताओं को एक-दूसरे के साथ समन्वय करने के लिए मजबूर करके एक राष्ट्रीय पार्टी की स्थापना से जुड़ी लागत को बढ़ाती है। इस दौरान, लगातार गठबंधन सरकार क्षेत्रीय दलों को राष्ट्रीय स्तर की सरकार में भाग लेने की अनुमति देकर क्षेत्रीय पार्टी की सदस्यता से जुड़े लाभों को बढ़ाती है। अनुभवजन्य रूप से, यह शोध प्रबंध 17 महीने के क्षेत्रीय शोध और तीन भारतीय राज्यों: राजस्थान, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में राज्य और स्थानीय स्तर के राजनेताओं के 550 से अधिक साक्षात्कारों पर आधारित है।[8]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "बसपा मध्य प्रदेश और राजस्थान में कांग्रेस को समर्थन देगी" । इंडिया टुडे । 16 अक्टूबर 2022 को लिया गया ।
2. ^ "सदनों की शर्तें" । भारत का चुनाव आयोग . 11 मई 2018 को लिया गया .
3. ^ "राजस्थान विधानसभा चुनाव: सीएम वसुंधरा राजे के लिए करो या मरो" । हिंदुस्तान टाइम्स । 31 जुलाई 2018 । 16 अक्टूबर 2022 को लिया गया ।
4. ^ "चुनाव एग्जिट पोल परिणाम 2018"। हिंदुस्तान टाइम्स। 7 दिसंबर 2018.
5. ^ "राजस्थान, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, मिजोरम, एमपी एग्जिट पोल 2018: हाइलाइट्स - टाइम्स ऑफ इंडिया ►" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 7 दिसंबर 2018 को लिया गया .
6. ^ न्यूज 18: राजस्थान चुनाव परिणाम
7. ^ "राजस्थान विधानसभा चुनाव उम्मीदवारों की सूची 2018 | टाइम्स ऑफ इंडिया" ।
8. ^ "निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व" । rajassembly.nic.in । 2 सितंबर 2018 को मूल से संग्रहीत । 2 सितंबर 2018 को लिया गया ।

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor:
7.580

doi crossref

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com

www.ijmrsetm.com